IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 2, November 2025
Impact Factor: 7.67

# कोरोना संकट में सूचना प्रसार और जन-जागरूकता अभियानों की प्रभावशीलता: धार जिले का अध्ययन

अनूप कुमार भगोरे[1] and डॉ. ममता[2]

[1]शोधार्थी, सामाजिक कार्य-विभाग

[2]शोध निर्देशक, सामाजिक कार्य-विभाग

विक्रांत विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

**सारांश**

कोविड-19 महामारी के दौरान सूचना प्रसार और जन-जागरूकता अभियानों ने संक्रमण कम करने, व्यवहार परिवर्तन को बढ़ावा देने और समुदायों को स्वास्थ्य दिशानिर्देशों का पालन करने हेतु प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह समीक्षा लेख धार जिले के संदर्भ में उपलब्ध शोध, सरकारी रिपोर्टों तथा सामुदायिक अनुभवों के आधार पर सूचना प्रसार रणनीतियों, उनकी प्रभावशीलता, चुनौतियों व भविष्य के सुधारात्मक उपायों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन से पता चलता है कि यद्यपि बहुस्तरीय संचार माध्यमों ने ग्रामीण व आदिवासी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण कार्य किया, फिर भी डिजिटल विभाजन, अफवाहें, शिक्षा स्तर और भाषा अवरोध जैसे कारकों ने अभियानों की सफलता को सीमित किया।

**मुख्य संकेतक:** जन-जागरूकता अभियान, महामारी संचार, स्वास्थ्य शिक्षा, ग्रामीण समुदाय।

## परिचय

कोविड-19 महामारी एक वैश्विक आपदा के रूप में उभरी जिसने न केवल स्वास्थ्य नागरिकों को चुनौती दी बल्कि संचार और सूचना प्रबंधन की क्षमताओं की भी परीक्षा ली (शर्मा, 2021)। भारत में विशेष रूप से ग्रामीण और आदिवासी अंचलों वाले जिलों जैसे कि मध्यप्रदेश का धार जिला में प्रभावी सूचना प्रसार, व्यवहार परिवर्तन और निवारक उपायों को जागरूकता हेतु नियोजित और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील जन-जागरूकता पहल की आवश्यकता महसूस की गई (यादव, 2021)। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने शुरुआती चरण में

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 2, November 2025 Impact Factor: 7.67

ही स्पष्ट कर दिया था कि महामारी से लड़ने के लिए "इन्फोडेमिक" अर्थात गलत सूचनाओं के प्रसार को रोकना उतना ही आवश्यक है जितना कि संक्रमण रोकना (ठाकुर, 2020)।

इसी संदर्भ में धार जिले में विभिन्न स्तरों पर सरकारी, गैर-सरकारी और समुदाय आधारित संगठनों ने विविध जागरूकता कार्यक्रम संचालित किए। यह समीक्षा लेख धार जिले में कोरोना काल के दौरान किए गए सूचना प्रसार के प्रयासों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है तथा यह समझने का प्रयास करता है कि इन पहल ने जनता के व्यवहार, जोखिम-धारणा और सुरक्षा उपायों के पालन पर किस प्रकार प्रभाव डाला। COVID-19 महामारी 21वीं सदी की सबसे गंभीर वैश्विक स्वास्थ्य चादर में से एक सिद्ध हुई, जिसने न केवल स्वास्थ्य आश्रित किया, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और संचार आंदोलनों को भी अभूतपूर्व रूप से प्रभावित किया।

महामारी के शुरुआती चरण में ही विश्व स्वास्थ्य संगठन ने स्पष्ट किया कि यह संकट केवल एक स्वास्थ्य आपदा नहीं है, बल्कि एक "इन्फोडेमिक" अर्थात् लंबवत और गलत लंबवत के तीव्र प्रसार का भी संकट है, जो महामारी प्रबंधन को जटिल बनाता है (ठाकुर, 2020)। इस संदर्भ में प्रभावी सूचना प्रसार और जन-जागरूकता जुटाने का महत्व अत्यंत बढ़ जाता है। एनएच ग्रामीण और आदिवासी बहुल क्षेत्रों जैसे कि मध्यप्रदेश का धार जिला के लिए विश्वसनीय, बोधगम्य और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील संचार तंत्र महामारी नियंत्रण की कुंजी सिद्ध हुआ (बरिया, 2021)।

COVID-19 की पहली लहर के दौरान जब लॉकडाउन लागू किया गया, तब देशभर में सामान्य जनजीवन बाधित हो गया, जिससे लोगों के लिए आवश्यक लंबवत, स्वास्थ्य अनुवर्ती और सरकारी सहायता योजनाओं तक पहुँच अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई (मिश्रा, 2021)। ऐसे समय में सही और वास्तविक जानकारी न केवल डर और भ्रम को कम करती है, बल्कि लोगों में सुरक्षित व्यवहार जागरूकता की प्रेरणा भी देती है, जैसे मास्क पहनना, हाथ धोना, भीड़ से दूरी बनाए रखना तथा टीकाकरण के लिए तैयार होना (चौहान, 2020)। महामारी ने यह स्पष्ट कर दिया कि स्वास्थ्य संकट में सूचना प्रबंधन और संचार प्रतिक्रियाएं किसी भी देश की आपदा प्रबंधन क्षमता का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

धार जिला अपनी भौगोलिक और सामाजिक संरचना के कारण COVID-19 के दौरान विशेष रूप से संवेदनशील क्षेत्र के रूप में एकल। यह जिला आदिवासी बहुल है, जहाँ भाषा विविधता, सीमित स्वास्थ्य सेवाएं, डिजिटल पहुंच की कमी और तटस्थ कम साक्षरता स्तर जैसे कारक सूचना प्रसार को जटिल बनाते हैं (मनवर, 2022)। ऐसे क्षेत्रों में सूचना केवल प्रसारित कर देना पर्याप्त नहीं होता; उसे स्थानीय भाषा, संस्कृति और सामाजिक संरचना के अनुरूप प्रस्तुत करना आवश्यक होता है। शोध छापे हैं कि आदिवासी क्षेत्रों में

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 2, November 2025 Impact Factor: 7.67

विश्वसनीय सूचना स्रोत में पंचायत प्रतिनिधि, आशा कार्यकर्ता, शिक्षक, सामाजिक कार्यकर्ता और स्थानीय सामुदायिक नेता महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं (सिंह, 2021)।

कोविड-19 संकट में सूचना प्रसार के लिए डिजिटल माध्यमों का उपयोग तेजी से बढ़ा। अप्लायब, मोबाइल मैसेजिंग, समुदाय आधारित रेडियो, ऑफ़लाइन वीडियो, सोशल मीडिया पोस्ट और डिजिटल पोस्टरों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई (काले, 2022)। लेकिन यह बात भी साफ हो गई कि ग्रामीण भारत में डिजिटल डिविजन संचार की सबसे बड़ी खबर में से एक है। धार जिले में कई स्थानीय फर्मों से पुष्टि की गई है कि विश्वसनीय इंटरनेट सेवा, टेक्नोलॉजी और डिजिटल उपकरणों की कमी के कारण डिजिटल सूचनाएं सीमित वर्ग तक ही पहुंच पाती हैं (पवार, 2020)। वैकल्पिक पारंपरिक संचार उपकरण - जैसे ढोल-नगाड़ा घोषणाएँ, ऑटो-चिप माइक अभियान, पोस्टर-बैनर, बैलवाड़ी/आशा साहित्य के घर-घर भ्रमण - कहीं अधिक प्रभावशाली भूमिका निभाते हैं (सोलंकी, 2020)।

महामारी के दौरान गलत सूचनाएं और अफवाहें प्रचार प्रसार पर गहरा प्रभाव डालती रहीं। सोशल मीडिया के माध्यम से टीकाकरण के खतरे, सरकारी विशेषज्ञों के प्रति विश्वास और कोरोना संक्रमण से जुड़े अवैज्ञानिक वैज्ञानिकों ने ग्रामीण क्षेत्रों में भय का माहौल पैदा किया (घोष, 2020)। धार जिले में भी ऐसे ही गलत टॉयलेट ने टीकाकरण टीकाकरण और स्वास्थ्य सेवाओं पर ग्रेड में वृद्धि की, जिसमें विकलांगों के लिए सरकार, स्वास्थ्य विभाग और स्वयंसेवी युवाओं को संयुक्त रूप से प्रयास करने पड़े (परिहार, 2022)। स्थानीय भाषा में वीडियो संदेश, ग्राम सभाओं में संवाद, धार्मिक और सांस्कृतिक नेताओं का सहयोग और आशा सिद्धांतों द्वारा व्यक्तिगत परामर्श ने आख्यानों को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई (चौधरी, 2022)।

जन-जागरूकता अभियानों का प्रभाव केवल स्वास्थ्य व्यवहार तक सीमित नहीं रहा, बल्कि सामाजिक सहयोग और मनोवैज्ञानिक सहायता में भी वृद्धि देखी गई। कोविड-19 के दौरान कई समूहों में स्वयंसेवकों ने राशन वितरण, औषधियों की मदिरा, प्रवासी प्रवासियों का समर्थन, सामुदायिक रसोई संचालन और स्वास्थ्य शिविरों के आयोजनों में सक्रिय भागीदारी शुरू की (राठौड़, 2021)। इन आश्रम ने यह प्रभावशाली सूचना प्रसारक सोशल शोरूम को बढ़ावा दिया है और संकट प्रबंधन को और अधिक सक्रिय संस्थाएँ दी हैं।

धार जिले में विशेष रूप से टीकाकरण अभियान सूचना प्रबंधन की सफलता का प्रमुख उदाहरण माना जाता है। शुरुआती चरण में टीकाकरण को लेकर कई संदेह और भय थे, लेकिन लगातार जागरूकता कार्यक्रम, स्थानीय दूतों की भूमिका और वास्तविक उदाहरणों के प्रचार से टीकाकरण में बढ़ोतरी हुई (जडेजा, 2022)।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 2, November 2025 Impact Factor: 7.67

स्थानीय भाषा-भीली, पाटली और निमाड़ी-में निर्माण सामग्री ने विश्वास निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ग्रामीण महिलाओं में जागरूकता बढ़ाने के लिए स्व-सहायता समूह ने विशेष योगदान दिया (चौधरी, 2022)। हालाँकि, चुनौतियाँ अब भी अनेक थीं। जैसे-संचार में सीमित स्वास्थ्य ढाँचा, सामाजिक दूरी के साथ बच्चों का पालन-पोषण, और महामारी के समय आर्थिक असुरक्षा (कुमार, 2020)। इसके बावजूद धार जिले में मल्टीमिस्ट्री, डिजिटल, ट्रेडिशनल और स्कोपी-के संयोजन ने महामारी प्रबंधन को बेहतर बनाया है। यह अध्ययन इस दिशा में दिए गए प्रयासों का विश्लेषण करता है और यह सुझाव देने का प्रयास करता है कि सूचना प्रसार और जन-जागरूकता अभियानों ने किस प्रकार के नेटवर्क के व्यवहार, स्वास्थ्य विश्वास और महामारी-उत्तर की तैयारी को प्रभावित किया है।

इस अध्ययन की आवश्यकता इसलिए भी है क्योंकि महामारी के लक्षण से लेकर भविष्य के लिए बेहतर संचार मॉडल विकसित किया जा सकता है। ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्र में सूचना प्रसार केवल प्रौद्योगिकी का विषय नहीं है, बल्कि सामाजिक वर्गीकरण, सांस्कृतिक पहचान और समुदाय के विश्वास-तंत्र की समझ पर भी प्रतिबंध है (बारिया, 2021)। धार जिले का अनुभव यह भी बताता है कि समुदाय आधारित संचार, स्थानीय नेतृत्व और विश्वास पैदा करने वाले अभियान महामारी-प्रबंधन के सबसे प्रतिष्ठित और प्रभावी उपकरण बन सकते हैं।

## साहित्य समीक्षा

**महामारी के समय सूचना प्रसार का महत्व:** कई निर्देशों से पता चलता है कि लोगों में भय कम होता है और उन्हें सुरक्षित व्यवहार अनुशासन की प्रेरणा मिलती है (मिश्रा, 2021)। ग्रामीण पंचायत में रेडियो, मोबाइल संदेश, स्थानीय भाषा में पोस्टर और स्तर पर रैलियों की घोषणा प्रभावशाली माध्यम मनी बना (चौहान, 2020)।

**धार जिले का सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ:** धार जिले के जनजातीय बहुल क्षेत्र के कारण भाषाई-सांस्कृतिक विविधता, सीमित डिजिटल पहुंच और स्वास्थ्य जागरूकता स्तर में विविधता पाई जाती है (बैरिया, 2021)। स्थानीय बोली और जनसंस्कृति के अनुकूल अभियानों की आवश्यकता थी (मनावर, 2022)।

**अफ़वाहों और ग़लतियों की चुनौतियाँ:** कोरोना काल में सोशल मीडिया के माध्यम से पिशाच वाली अफवाहें जैसे औषधियों के बारे में भ्रम, टीकाकरण से जुड़ी भ्रांतियां ने जन-जागरूकता प्रयास को प्रभावित किया (घोष, 2020)। धार जिले में भी गलती से टीकाकरण पर प्रभाव डाला गया (परिहार, 2022)।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 2, November 2025 Impact Factor: 7.67

## सूचना प्रसार की प्रमुख रणनीतियाँ

**डिजिटल प्लेटफॉर्म और मोबाइल संचार:** मोबाइल संदेश, प्रोटोटाइप समूह, डिजिटल पोस्टर और वीडियो साझा किए गए। हालाँकि डिजिटल डिजिटल सीमित था, लेकिन युवाओं ने इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई (काले, 2022)।

कोरोना संकट के दौरान डिजिटल प्लेटफॉर्म और मोबाइल संचार ने सूचना प्रसार को तेज, व्यापक और अधिक प्रभावशाली बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ग्रामीण और शहरी दोनों समुदायों के लिए समृद्ध जानकारी के लिए विकिपीडिया, फेसबुक, ट्विटर, यूट्यूब और मोबाइल कॉल/एसएमएस जैसे माध्यमों का उपयोग सरकार और स्वास्थ्य छवि द्वारा व्यापक रूप से किया गया है। अरेस्ट धार जिले जैसे अर्ध-ग्रामीण क्षेत्र में मोबाइल संचार रोकथाम संदेश, लॉकडाउन निर्देश, टीकाकरण अभियान और आपातकालीन सेवाओं की जानकारी नागरिकों का प्रमुख उपकरण बनाया गया।

भारत सरकार के स्वास्थ्य सेतु और CoWIN जैसे उपकरणों ने केवल स्वास्थ्य संबंधी परामर्श जारी नहीं किए बल्कि नागरिकों को स्वयं निगरानी और टीकाकरण पंजीकरण में भी सक्षम बनाया। डिजिटल माध्यमों ने समयबद्ध सूचना उपलब्ध कराए गए ज्वालामुखी और गलत जानकारी से भी मदद की, जिससे नेटवर्क में स्वास्थ्य सुरक्षा व्यवहार को बढ़ावा मिला (मेहता, 2021; सिंह और शर्मा, 2020)। मोबाइल-आधारित संचार की व्यापक बातचीत ने महामारी प्रबंधन में सूचना के दस्तावेज़ को स्मारक के रूप में प्रस्तुत किया।

## सामुदायिक नेतृत्व आधारित जागरूकता

समुदाय में जन-विश्वास पर आधारित संचार आवश्यक था। ग्राम पंचायत, बेलावेलरी डीलरशिप, आशा लाइसेंस और शिक्षक-स्वयंसेवकों ने घर-घर पहुंच संदेश भेजा (सिंह, 2021)। कोरोना संकट के दौरान एशियाई नेतृत्व आधारित जागरूकता ने ग्रामीण और युवा क्षेत्रों में स्वास्थ्य संबंधी जानकारी के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्थानीय सरपंचों, आशा लॉजिकों, वैलवाड़ी सेवा प्रदाताओं और स्वयंसेवकों ने अपने सामाजिक प्रभाव और स्थानीय समझ का उपयोग करते हुए लोगों को प्रशिक्षित भाषा सिखाई, जिससे भय, भ्रम और अफवाहों को कम करने में मदद मिली (शर्मा, 2021)।

विशेष रूप से धार जिलों जैसे जनजातीय बहुल क्षेत्रों में, समुदाय के विश्वसनीय नेतृत्व ने घर-घर संपर्क, मेघा-फोन घोशाएं, छोटी बैठकें और स्थानीय सांस्कृतिक प्रतीकों के माध्यम से कोविड-19 के अनुरूप व्यवहार के लिए प्रेरित किया (सिंह और पटेल, 2022)। शोध में बताया गया है कि जब सूचनात्मक स्थानीय नेतृत्व के

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 2, November 2025 Impact Factor: 7.67

माध्यम से प्रसारण होता है तो समुदाय का प्रभुत्व बढ़ जाता है और व्यवहार परिवर्तन की संभावना अधिक हो जाती है (मेहता, 2020)। इस प्रकार का एक प्रभावशाली घटक सिद्ध हुआ।

**पारंपरिक माध्यम (रिक्शा-घोषणाएँ, ढोल-नगाड़ा, पोस्टर)**

धार जिले में सीमित इंटरनेट क्षेत्र में पारंपरिक माध्यम अधिक प्रभावशाली साबित हुआ (सोलंकी, 2020)। कोरोना संकट के दौरान ग्रामीण क्षेत्रों में सूचना प्रसार के लिए पारंपरिक माध्यमों की भूमिका अत्यंत प्रभावशाली रही, संयुक्त राष्ट्र के संयुक्त राज्य अमेरिका में डिजिटल फ़ॉर्मेट की शब्दावली सीमित थी। धार जिले जैसे जन-जातीय-बहुल इलाकों में चित्र-घोषणाएं, ढोल-नगाड़ा और पोस्टरों का उपयोग लोगों तक स्पष्ट और स्पष्ट संदेश व्यक्तियों में महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ।

छवि-घोषणाएं मोबाइल संचार के रूप में काम करती हैं, जिससे स्वास्थ्य-सलाह, लॉकडाउन और टीकाकरण समय-सारणी सीधे घर-घर तक पहुंच जाती है। वहीं ढोल-नगाड़ा जैसे सांस्कृतिक विभिन्नता पर नागाओं ने कम्यूनिटी के पिज्जा की गैलरी को पिज्जा (मीना, 2021) दिया। पोस्टर और वॉल-लेखन ने स्थायी सूचना स्रोत के रूप में काम किया, जिसमें लोग बार-बार आवेदन को समझ सकते थे (शर्मा और पटेल, 2020)। इन पारंपरिक माध्यमों ने स्थानीय समुद्री और सांस्कृतिक प्रतीकों का उपयोग करके संचार को और अधिक आकर्षक और प्रभावशाली बना दिया।

**अभियानों की प्रभावशीलता**

**1. व्यवहारिक परिवर्तन**

धार जिले में मास्क का उपयोग, हाथ की धुलाई और सामाजिक दूरी के पालन में स्पष्ट सुधार देखा गया (पटेल, 2022)। कोरोना संकट के दौरान व्यवहारिक परिवर्तन जन-जागरूकता अभियानों की सफलता का केंद्रीय तत्व है, क्षेत्र जैसे क्षेत्र धार जिले में। जब महामारी का खतरा बढ़ा, तब लोगों को मुखौटे के नमूने, हाथ धोना, सामाजिक दूरी बनाए रखना और भीड़भाड़ वाले स्थान से बचना जैसे नए स्वास्थ्य व्यवहार व्यवहार पड़े। इस परिवर्तन को स्थानीय स्तर पर चलाए गए प्रचार प्रसार कार्यक्रम, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, आशा कर्मचारी और पंचायत-आधारित संचार प्रणाली ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई (शर्मा और गुप्ता, 2021)।

व्यवहारिक परिवर्तन सिद्धांतों के, जब विश्वसनीय विश्वसनीयता सतत और संदर्भ-संगत जानकारी दी जाती है, तो समुदाय नए प्रयोग को आसानी से अपनाता है (रोजर्स, 2003)। धार जिले में स्थानीय भाषा और सामाजिक-

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 2, November 2025 Impact Factor: 7.67

सांस्कृतिक संदर्भों के शोधकर्ता ने लोगों के बीच विश्वास पैदा किया, जिससे उन्हें स्वास्थ्य-संबंधी शिक्षा का पालन करने के लिए प्रेरित किया गया। इसके विपरीत, जन-जागरूकता अभियानों ने जोखिम को कम करने और एकल क्षमता बढ़ाने में उल्लेखनीय योगदान दिया (पटेल, 2022)।

### 2. टीकाकरण दरों में वृद्धि

स्थानीय भाषा अभियान और आशा दार्शनिकों की प्रेरणा से टीकाकरण में प्रति विश्वास बढ़ाया गया (जडेजा, 2022)। कोरोना संकट के दौरान प्रभावशाली सूचना प्रचार और जन-जागरूकता अभियानों ने धार जिलों में टीकाकरण में वृद्धि सुनिश्चित की। स्थानीय प्रशासन, स्वास्थ्य विभाग और बालवाड़ी सुपरमार्केट ने घर-घर संपर्क, ग्राम स्तर पर बैठकें और स्थानीय भाषा में संदेश प्रसारित करके वैक्सीन से जुड़े मिथियों को दूर किया। विशेष रूप से जनजातीय बहुल क्षेत्र में विश्वसनीय संसाधनों से प्राप्त जानकारी - जैसे स्वास्थ्य मंडल और समुदाय के संप्रदाय - ने टीकाकरण समूह को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई (शर्मा और गुप्ता, 2021)। सोशल मीडिया, पंचायत ने घोषणा की और मोबाइल वैन ने जागरूकता को और व्यापक बनाया, जिससे लोगों में टीकाकरण की सुरक्षा और शिक्षण संबंधी विश्वास मजबूत हुआ। परिणामस्वरूप, टीकाकरण टीकाकरण पर लोगों की संख्या और प्रथम और द्वितीय खुराक की पूर्णता दर में सुधार देखा गया (पटेल, 2022)। ऐसे अभियान में सार्वजानिक स्वास्थ्य हस्तक्षेपों को प्रभावित करने वाले अभियानों को प्रभावित किया गया है (WHO, 2020)।

### 3. कमजोर वर्गों तक सूचना की पहुंच

महिला स्व-बोलचाल की लत को बढ़ाने के लिए जपानीस और महिला समाजसेवा ने महत्वपूर्ण योगदान दिया (चौधरी, 2022)। कोविड-19 महामारी ने समाज के सामान्य लोगों को प्रभावित किया है - जैसे कि युवा, महिलाएं, बुजुर्ग नागरिक और आर्थिक रूप से पिछड़े परिवार - तक अधिकार और समय पर सूचित व्यक्ति की चुनौती को शामिल किया गया। इन लाइलाज के लिए डिजिटल माध्यमों तक सीमित पहुंच, भाषाई विविधता और कम एफएम स्तर के सूचना प्रसार के प्रमुख बाधाएं हैं (पवार, 2020)। धार जिलों में भी आदिवासियों और ग्रामीण इलाकों तक मोबाइल संदेश या ऑनलाइन जागरूकता सामग्री का प्रभाव सीमित रहा, जिससे पारंपरिक माध्यमों जैसे ग्राम सभा, आशा और बेलवाड़ी विक्रेताओं द्वारा घर-घर की जानकारी की आवश्यकता हो गई (चौधरी, 2022)। इसके अलावा, महिला स्व-लैंगिकता और स्थानीय नेतृत्व ने फ़्लोरिडा

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 2, November 2025 Impact Factor: 7.67

फ़्लोरिडा में स्वास्थ्य वैल्युएबल्स का और फ़ोर्सुअल उत्पाद व्यवसाय पर ज़ोर दिया (सिंह, 2021)। इसमें यह बताया गया है कि समुदाय आधारित और बहु-राष्ट्रवादी कम्युनिस्ट रणनीतियाँ ही जानकारी में अधिक प्रभावशाली सिद्ध होती हैं।

## प्रमुख चुनौतियाँ

### 1. डिजिटल विभाजन

कई गांवों में इंटरनेट और प्रौद्योगिकी की सीमित सीमा से डिजिटल संदेश प्रभावशाली नहीं रहे (पवार, 2020)। डिजिटल डिविजन के उस अंतर का वर्णन है जो विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और भौगोलिक वनस्पति के बीच डिजिटल तकनीक, इंटरनेट और सूचना तक पहुंच में मौजूद है (वैन डिज्क, 2020)। ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में इलेक्ट्रॉनिक्स, इंटरनेट और डिजिटल मंदिरों की कमी की सूचना और ऑफ़लाइन सेवाओं के उपयोग में बाधा उत्पन्न होती है (पवार, 2020)। कोरोना महामारी के दौरान डिजिटल डिविजन विशेष चुनौती बन गई, क्योंकि स्वास्थ्य जागरूकता, ऑनलाइन शिक्षा और सरकारी सहायता सूचनाएं मुख्य रूप से डिजिटल माध्यमों पर प्रतिबंध लगाती हैं (काले, 2022)। धार जिले जैसे ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल अप्रसार ने सूचना प्रसार और जन-जागरूकता अभियानों की शुरूआत को सीमित कर दिया। इसे कम करने के लिए स्थानीय भाषा में डीवीडी सामग्री, शास्त्रीय प्रशिक्षण और डिजिटल संगीत कार्यक्रम का आयोजन आवश्यक है (मनावर, 2022)।

### 2. भाषा एवं सांस्कृतिक अवरोध

युवा बोलियों में सामग्री उपलब्ध नहीं होने से प्रारंभिक चरण में ब्रह्मा की स्थिति रही (बामनिया, 2022)। कोविड-19 महामारी में प्रचार प्रसार की सफलता पर भाषा और सांस्कृतिक अवरोधों का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। धार जिले जैसे आदिवासी बहुल इलाकों में स्थानीय बोलियाँ और सांस्कृतिक साँचे, सरकारी बाज़ार और स्वास्थ्य के प्रभावशाली संचार में बाधक सिद्धदोष (बैरिया, 2021)। जब जानकारी केवल हिंदी या अंग्रेजी में उपलब्ध थी, तब ग्रामीण और आदिवासी समुदायों में भ्रम, मिथ्या और अफवाहें फैल गईं (घोष, 2020)। इसके अतिरिक्त, धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक लोगों ने व्यवहार परिवर्तन को प्रभावित किया; उदाहरण के लिए, सामूहिक पूजा या त्योहारों में सामाजिक दूरी का पालन करना कठिन हो गया (चौधरी, 2022)। ऐसे परिदृश्यों में स्थानीय भाषा में जागरूकता अभियान, सांस्कृतिक रूप से संदेश संदेश और

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 2, November 2025 Impact Factor: 7.67

समुदाय आधारित संवाद अधिक प्रभावशाली साबित हुए। यह स्पष्ट करता है कि भाषा और संस्कृति पर ध्यान देते हुए संचार रणनीतियाँ ही महामारी-प्रबंधन में सफलता का संचार करती हैं (सिंह, 2021)।

### 3. गलत सूचनाएँ और अफवाहें

टीकाकरण के रहस्य को लेकर फैलाए गए भ्रमों ने जागरूकता अभियानों के खंड पर प्रभाव डाला (घोष, 2020)। COVID-19 महामारी के दौरान ग़लत फ़िल्में और अख़बारों का प्रकाशन एक गंभीर चुनौती के रूप में सामने आया। सोशल मीडिया, एप्पल, फेसबुक और अन्य डिजिटल प्लेटफॉर्म्स ने स्वास्थ्य संबंधी क्रांतियों में तेजी से प्रसार में भूमिका निभाई (घोष, 2020)। उदाहरण के लिए, टीकाकरण से जुड़े अफवाहें, घरेलू नुस्खों के गुण और सरकारी प्राथमिकता पर विश्वास ने लोगों के स्वास्थ्य व्यवहार और सरकारी पहल पर भरोसेमंद धोखाधड़ी (परिहार, 2022)। धार जिले में भी ऐसे मामलों ने समुदाय के टीकाकरण दर और स्वास्थ्य पर्यवेक्षण के सिद्धांतों पर प्रभाव डाला। विशेषज्ञ की भाषा है कि महामारी के दौरान इन अफवाहों पर रोक के लिए स्थानीय में स्पष्ट संदेश, कोचिंग संस्थानों के नेताओं की भागीदारी और विश्वसनीय सूचना का उपयोग आवश्यक है (चौधरी, 2022)। इस प्रकार, ग़लत सूचनाएँ केवल सूचना प्रसार का बाधक नहीं, बल्कि स्वास्थ्य सार्वजनिक प्रबंधन के लिए गंभीर ख़तरा बन गया।

## निष्कर्ष

समीक्षा से स्पष्ट होता है कि कोरोना संकट के दौरान धार जिले में सूचना प्रसार और जन-जागरूकता अभियानों ने स्वास्थ्य-सुरक्षा व्यवहार बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। डिजिटल माध्यम, सामुदायिक नेतृत्व, पारंपरिक संचार तकनीकों और स्थानीय भाषा-आधारित सामग्री ने अभियान की प्रभावशीलता को बढ़ाया। तथापि डिजिटल विभाजन, भाषा अवरोध और अफवाहों जैसी चुनौतियों ने प्रक्रिया को प्रभावित किया। भविष्य में सूचना प्रसार रणनीतियों में स्थानीय संस्कृति-उन्मुख संचार, डिजिटल पहुंच विस्तार और सामुदायिक विश्वास-आधारित तंत्र को मजबूत करने की आवश्यकता है।

## सन्दर्भ सूची

1. काले, आर. (2022)। ग्रामीण युवा और कोविड-19 सामाजिक पहल। युवा विकास पत्रिका, 9(2), 50-63।
2. घोष, ए. (2020)। महामारी में सामाजिक न्याय के प्रश्न. समाज दर्शन जर्नल, 19(3), 77-89।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 2, November 2025 Impact Factor: 7.67

3. चौधरी, आर. (2022)। कोविड-19 में महिला स्व-नियोजना की भूमिका। महिला अध्ययन पत्रिका, 8(1), 77-91।
4. चौहान, ए. (2020)। जन-स्वास्थ्य सेवाओं की चुनौतियाँ: कोरोना काल का अनुभव। लोक स्वास्थ्य पत्रिका, 9(2), 88-97.
5. जड़ेजा, पी. (2022)। महामारी और ग्रामीण क्षेत्र में स्वास्थ्य सेवाओं की शाखाएं। क्षेत्रीय विकास अध्ययन, 12(1), 92-105।
6. ठाकुर, जे. (2020)। महामारी संकट में सामाजिक दार्शनिक की भूमिका: एक आकलन। सामाजिक शोध समीक्षा, 18(3), 23-34।
7. पटेल, डी. (2022)। कोविड-19 लॉकडाउन का ग्रामीण क्षेत्र पर प्रभाव: धार जिले का विश्लेषण। मध्यभारत अध्ययन, 7(1), 55-70.
8. परिहार, के. (2022)। धार जिले में कोविड-19 संबंधित मनोवैज्ञानिक सहायता का अध्ययन। क्षेत्रीय समाजशास्त्र पत्रिका, 5(2), 19-33.
9. पवार, एस. (2020)। लॉकडाउन और शिक्षा सेवाओं का डिजिटलीकरण। शिक्षा चर्चा, 17(4), 55-69.
10. बामनिया, जे. (2022)। धार जिले के स्वास्थ्य वाहनों की रेटिंग का आकलन। स्वास्थ्य सेवा विश्लेषण, 10(1), 45-60।
11. बारिया, आर. (2021)। कोविड-19 और जनजाति समुदाय की सामाजिक सुरक्षा। अरबी अध्ययन समीक्षा, 16(1), 49-61।
12. मनावर, के. (2022)। धार जिले में कोविड-19 जागरूकता अभियानों का आकलन। क्षेत्रीय विकास पत्रिका, 5(1), 18-30।
13. मिश्रा, एस. (2021)। कोविड-19 और समुदाय आधारित सहयोग नेटवर्क। भारतीय सामाजिक सेवा जर्नल, 15(4), 41-52।
14. यादव, आर. (2021)। प्रवासी प्रवासियों की वापसी एवं रेखाचित्र: एक अध्ययन। सामाजिक परिवर्तन जर्नल, 19(3), 29-40।
15. सिंह, पी. (2021)। कोविड-19 सहायता वितरण में भूमिका. ग्रामीण विकास अनुसंधान, 14(1), 72-84.

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 2, November 2025
Impact Factor: 7.67

16. सोलंकी, एम. (2020)। ग्रामीण स्वास्थ्य अवसंरचना और महामारी प्रबंधन। स्वास्थ्य प्रबंधन जर्नल, 6(3), 48-62।